कुमार जीवन - 32

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **सिर्फ एक बात की सदा सावधानी रखो। जो भी करना है, श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ बनना है। तो हर बात में दृढ़ संकल्प वाले बनो। कुछ भी सहन करना पड़े, सामना करना पड़े लेकिन श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ परिवर्तन करना ही है। इसमें पुरुषार्थी शब्द को अलबेले रूप में यूज़ नहीं करो।** पुरुषार्थी हैं, चल रहे हैं, कर रहे हैं, करना तो है, यह अलबेलेपन की भाषा है। उसी घड़ी पुरुषार्थी शब्द को अलबेले रूप में यूज़ नहीं करो। उसी घड़ी पुरुषार्थी शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाओ। पुरुष हूँ, प्रकृति धोखा दे नहीं सकती। **यह सब प्रकार की कमजोरियाँ अलबेलेपन की निशानियाँ हैं।**

➳ _ ➳ महावीर तो पहाड़ को भी सेकेण्ड में हथेली पर रख उड़ने वाला है। अर्थात् पहाड को भी पानी के समान हल्का बनाने वाला है। छोटी-छोटी परिस्थितियाँ क्या बात हैं! फिर तो ऐसे महावीर को कहेंगे चीटी से घबराने वाले। **क्या करें, हो जाता है। यह महावीर के बोल हैं?** समझदार यह नहीं कहेंगे कि क्या करें, चोर आ जाता है। समझदार बार-बार धोखा नहीं खाते। अलबेले बार-बार धोखा खाते हैं। सेफ्टी के साधन होते हुए अगर कार्य में नहीं लगाते तो उसको क्या कहेंगे? जानता हूँ कि नहीं होना चाहिए लेकिन हो रहा है, इसको कौन सी समझदारी कहेंगे! **दृढ़ संकल्प वाले बनो। परिवर्तन करना ही है, कल भी नहीं, आज। आज भी नहीं अभी। इसको कहा जाता है "महावीर"। राम के आज्ञाकारी।**

➳ _ ➳ आज तो मिलने का दिन था फिर भी बच्चों ने मेहनत की है तो मेहनत का फल रेसपान्ड देना पड़ा। लेकिन इन कमजोरियों को साथ ले जाना है? दी हुई चीज़ फिर वापिस तो नहीं लेनी है ना! जबरदस्ती आ जावे तो भी आने नहीं देना। दुश्मन को आने दिया जाता है क्या?

➳ _ ➳ अटेन्शन, चेकिंग यह डबल लॉक, याद और सेवा यह दूसरा डबल लाक सबके पास है ना। तो सदा यह डबल लाक लगा रहे। दोनों तरफ लाक लगाना। समझा! एक तरफ नहीं लगाना। खातिरी तो स्थूल सूक्ष्म बहुत हुई है। डबल खातिरी हुई है ना। जैसे दीदी दादी वा निमित्त बनी हुई आत्माओं ने दिल से खातिरी की है तो उसके रिटर्न में सब दीदी दादी को खातिरी देकर जाना कि हम अभी से सदा के विजयी रहेंगे। सिर्फ मुख से नहीं बोलना, मन से बोलना। फिर एक मास के बाद इन फोटो वालों को देखेंगे कि क्या कर रहे हैं। किससे भी छिपाओ लेकिन बाप से तो छिपा नहीं सकेंगे। अच्छा – सदा दृढ़ सकंल्प द्वारा **सोचा और किया, दोनों को समान बनाने वाले**, सदा दिव्य नेत्र द्वारा आत्मिक रूप को देखने वाले, जहाँ देखें वहाँ आत्मा ही आत्मा देखें, ऐसे अर्थ स्वरूप पुरुषार्थी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते। **(27-4-1983)**

➢➢ श्रेष्ठ कर्म कौन कौन से हैं ?

➳ _ ➳ श्रीमत पर किये गए कर्म

➳ _ ➳ आत्म अभिमानी स्थिति में किये गए कर्म

→ "कर्म कैसे करना है ?" - यह प्रशन ही गलत है

→ "श्रेष्ठ कर्म कैसे किया जाए ?" - यह प्रशन ही गलत है

→ "क्या बनकर कर्म करना है ?" - यह प्रशन सही है

- "मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ" - इस स्वधर्म में स्थित होकर कर्म करना है

→ **यह सब कुछ सोचना नहीं पड़ेगा :-**

- यह परिस्थिति आएगी तो ऐसा करूंगा
- यह व्यक्ति आएगा तो ऐसा करूंगा

→ **सभी कर्म automatically श्रेष्ठ होने लगेंगे**

➳ _ ➳ जो कर्म बाप की याद में किये जाते हैं

➳ _ ➳ निस्वार्थ कर्म

➢➢ श्रीमत प्रमाण कर्म करने से फायदे

➳ _ ➳ नेचुरल ख़ुशी रहेगी

➳ _ ➳ हल्कापन रहेगा

➳ _ ➳ सदा संतुष्ट रहेंगे

➳ _ ➳ हलचल नहीं होगी

➢➢ ब्राह्मण जीवन का पुरुषार्थ

➳ _ ➳ श्रीमत , मनमत और परमत को पहचान पाना

➢➢ संकल्प, बोल और कर्म

➳ _ ➳ संकल्प कैसे होने चहिये

→ बाप की याद

➳ _ ➳ बोल कैसे होने चाहिए

→ बाप ने जो खजाने दिए है, वो दूसरों को देना

➳ _ ➳ कर्म कैसे होने चाहिए

→ बाप के चरित्र को सिद्ध करना